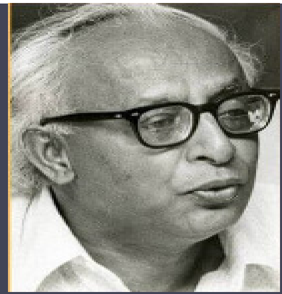

Structural-functional approach of M.N.SRINIVAS

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

भारतीय समाजशास्त्रयों में **प्रो0 ऍम0** एन0 श्रीनिवास का नाम अग्रणीय है। कर्नाटक के मूल निवासी श्रीनिवास का पूरा नाम मैसूर नरसिंहराव श्रीनिवास है। **16 नवम्बर 1916 को मैसूर में जन्में** श्रीनिवास की प्रारम्भिक शिक्षा मैसूर के स्थारनीय शिक्षण संस्थाओं में हुई। स्नातकोत्तर की डिग्री प्रो0 जी0 एस0 घुरये के मार्गदर्शन में सम्पनन कर Ph.D की डिग्री मुम्बई विश्वविद्यालय से प्राप्त की तत्पश्चात् आगे की पढ़ाई के लिए ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय लन्दन में गये और 1951 में पुन' भारत लौटकर बड़ौदा एवं दिल्ली विश्वविद्यालय में (Delhi school of Economics) समाजशास्त्र व सामाजिक मानवशास्त्र विभागों में अपनी सेवाएँ देकर सफलतापूर्ण संचालन किय।

मुख्य रचनाएँ–

- रिलिजन एवं सोसाइटी अमंग द कुगर्स ऑफ साउथ इण्डिया, 1952
  (The religion and society among the coogars south india-1952)
- कास्ट इन मार्डन इण्डिया एण्ड अदर ऐसेज–1962
  (Caste and modern india and other essays-1962)
- सोशल चेंज इन मार्डन इण्डिया–1973
  (Social change in Modern India- 1973)
- द रिमेनबर्ड विलेज–1976
  (The remainbard villiage-1976)
- मैरिज एण्ड फेमिली इन मैसूर–1942
  (Marriage and Family in Mesoor-1942)
- द डोमिनेंट कास्ट एण्ड अदर एसेज–1998
  (The Dominant Caste and other Essays-1998)

प्रभु जाति
(Dominant caste)

- प्रो0 एम0 एन0 श्रीनिवास ने सन् 1959 में मैसूर के रामपुरा गांव का अध्ययन करने के पश्चात सर्वप्रथम ‘प्रभुजाति‘ की अवधारणा को विकसित किया। प्रभु जाति के प्रबल जाति, प्रभुता सम्पन्न जाति, प्रभावी जाति तथा संरक्षक जाति आदि अनेक नामों से जाना जाता है। एम0 एन0 श्रीनिवास ने अपनी पुस्तक ‘इण्डियन विलेजेज‘ (प्दकपंद अपससंहमेद्ध में प्रभुजाति को परिभाशित कहरते हुए लिखा है,‘‘एक जाति तब प्रभु जाति कही जाती है। जब वह संस्था के आधार पर गाँव अथवा स्थानीय क्षेत्र में शक्तिशाली हो और प्रभावशाली हो और आर्थिक एवं राजनीतिक भाक्ति रखती हो। यह आवश्यक नहीं कि वह परम्परागत जाति क्रम सोपान में सर्वोच्च जाति की हो।‘‘

प्रभु जाति की विशेशताएँ
(Characteristics of Dominant caste)

- **आधुनिक शिक्षा एवं नवीन व्यवसाय**

  (Modern Education and new Occupation)–

  शिक्षा एवं नवीन व्यवसाय को प्रभु जाति के निर्धारण का एक महत्वपूर्ण तत्व स्वीकार किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज जिस जाति के अधिक सदस्यों ने आधुनिक शिक्षा प्राप्त करके अपने परम्परागत व्यवसाय को छोड़कर सरकारी या अन्य नौकरियों में स्थान प्राप्त कर लिया है। उनका अन्य जातियों पर प्रभुत्व स्थापित हो गया है। सामाजिक व भौक्षिक होने के कारण उनका सम्पर्क प्रशासनिक अधिकारियों के साथ होता है। जिसका प्रभाव अन्य जातियाँ भी मानती हैं।

आर्थिक एवं राजनीतिक प्रभुत्व
(Economic and Political Dominance)–

- क्षेत्र एवं गाँवों में प्रभु जाति आर्थिक व राजनीतिक दृश्टिकोण से अपना प्रभुत्व रखती है। गांव में अधिक भूमि उसके पास होती है जिस पर लोगों को पारिश्रमिक देकर कार्य कराया जाता है। उदाहरणार्थ– मैसूर के वानगल और डोलाना गाँवों में वहाँ की ओक्कालिंगा प्रभुजाति के पास गाँव की 80 प्रतिशत, गुजरात के कसेंद्रा गाँव के बघेल राजपूतों के पास गाँव की सारी भूमि थी, जो सम्पन्नता का प्रतीक थी। प्रभु जातियाँ इसी सम्पन्नता के कारण अन्य लोगों को ऋण देने में सक्षम थीं, जिस पर गाँव के अन्य जाति के व्यक्ति पर निर्भर होते थे।

जाति व्यवस्था में उच्च सामाजिक स्थिति–
(**Higher Status in Caste Hierachy**)–

जाति संस्तरण में प्रभु जाति अपना स्थान उच्च रखती है। यह भी इसकी विशेशता है। भारतीय व्यवस्था में कोई भी निम्न प्रभु जाति नहीं पायी जाती हैं, क्योंकि सामाजिक व्यवस्था में जातियों की प्रतिश्ठा व अस्पृश्यता का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

जनसंख्यात्मक शक्ति

(**Numerical strength**)–

प्रभु जाति के निर्धारण का एक महत्वपूर्ण आधार किसी गाँव अथवा क्षेत्र में एक विशेश जाति के सदस्यों की अधिक संख्या होना है। पहले यह आधार परम्परागत ग्रामीण समाजों में महत्वपूर्ण था, लेकिन जनतांत्रिक युग में इसका महत्व और बढ़ गया है। इलिएट ने अपने अध्ययन में प्रभु जाति के निर्धारण में जनसंख्यात्मक शक्ति को महत्वपूर्ण मानते हुए स्पश्ट किया है–कि प्रभु जाति की राजनीतिक शक्ति उसकी जनसंख्या के आधार पर ही निर्धरित होती है।'' इसी प्रकार के0 एल0 शर्मा ने सबलपुरा गाँव के अध्ययन के आधार पर स्पश्ट किया कि–''यहाँ जाट सर्वाधिक संख्या होने के कारण प्रभु जाति के अन्तर्गत सम्मिलित हैं।''

सम्पूर्ण गाँव की एकता, न्याय एवं कल्याण के लिए कार्य करना (**Administration of Justice, unity and welfare for the whole Community**)–

प्रभु जाति गाँव की एकता बनाये रखने में अपना योगदान देती हैं, और ऐसे कार्यकरती हैं, जिसमें सारे समुदाय की भलाई हो। अन्य जातियों के नियमों का सम्मान करते हुए निशपक्ष व तटस्थ रूप से गांव में न्यायपूर्ण कार्य करना प्रभु जाति की विशेशता रही है।

भारत की कुछ प्रमुख प्रभु जातियाँ
(Some Dominant caste of Indian Villages)

- विभिन्न विद्वानों ने भारतीय ग्रामों की प्रमुख जातियों को निम्नांकित रूप से वर्णित किया है। विद्यार्थियों के लिए यह जानना आवश्यक है–
- **एम0 एन0 श्रीनिवास** ने **मैसूर जिले के रामपुरा गाँव** में निवासित **ओक्कलिंगा जाति** को जनसंख्या, भू–स्वामित्व व झगड़े विवाद के निवारण में मुख्य भूमिका निर्वाह् करने के कारण प्रभु जाति कहा है।
- **आन्द्रे बैते** ने **तंजौर जिले के श्रीपुरम् गाँव** की **ब्राह्मण जाति** को गैर ब्राह्मण व द्रविणों पर अपना राजनीतिक धार्मिक एवं आर्थिक प्रभुत्व बनाये रखने के कारण प्रभु जाति के रूप में सम्मिलित किया है।
- **के0 एल0 शर्मा** ने **राजस्थान** के छः गाँवों का अध्ययन कर **राजपूतों** को प्रभु जाति बतलाया है।

भारत की कुछ प्रमुख प्रभु जातियाँ
(Some Dominant caste of Indian Villages)

- **एन0 शुक्ला** ने **भागलपुर** के पास **झूमको गाँव** में **यादव जाति** को प्रभुजाति के रूप में अध्ययन किया है।
- **डी0 एम0 मजूमदार** ने **मोहाना तथा दुल्दी गाँव में ठाकुर जाति** का प्रभुजाति के रूप में अध्ययन किया है।
- **ऑस्कर लेविस** ने **उत्तर प्रदेश के रामपुर गाँव** में **यादव जाति** को प्रभुजाति माना है।

प्रभु जाति की अवधारणा की आलोचना
(**Criticism** of the concept of Dominant caste)

- प्रभु जाति की एम0 एन0 श्रीनिवास द्वारा दी गयी अवधारणा से असहमत कुछ विद्वानों ने इसकी आलोचना की है। विद्यार्थियों को इसका ज्ञान होना आवश्यक है–

- **प्रो0 एस0 सी0 दूबे के अनुसार–** जनसंख्या की अधिकता प्रभुजाति का प्रमाण नहीं हो सकता। इन्होंने प्रभुजाति के स्थान पर **'प्रभुत्वशाली' व्यक्ति को महत्व दिया है।**

- **डी0 एन0 मजूमदार के अनुसार–**''प्रभुत्वशाली' व्यक्ति होने के लिए जातिगत संख्या की अधिकता आवश्यक नहीं है, क्योंकि उनका मानना है कि भारत के अनेक गाँवों में अनुसूचित जाति व जनजातियों की संख्या अधिक होने पर भी वे शक्तिशाली नहीं हैं। अर्थात् भारतीय सामाजिक व्यवस्था में उच्च जातियों को ही उच्च स्थान प्राप्त है। अतः वहीं प्रभुजाति हैं।

प्रभु जाति की अवधारणा की आलोचना
(**Criticism** of the concept of Dominant caste)

- **एंथोनी कार्टर के अनुसार–** जाति और प्रभुत्व दोनों सैद्वांतिक रूप से अलग–अलग हैं। ये बात उन्होंने महाराश्ट्र में गिरवी गाँव का अध्ययन करने के पश्चात् कही हैं जिसमें उन्होंने पाया था कि जातियाँ संगठित होकर कार्य नहीं करती हैं। अतः जाति को सत्ता से अलग कर देना चाहिए।

- उपरोक्त आलोचना स्पश्ट करती है कि विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभु जाति के निर्धारक तत्व एक–दूसरे क्षेत्र में लागू नहीं किया जा सकता। फिर भी श्रीनिवास की प्रभुजाति की अवधारणा विभिन्न जातियों के पारस्परिक संबंधों व ग्रामीण एकता को समझने के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।